स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ के अंतर्गत

हिंदी विषय में विद्यावाचस्पति (कला) उपाधि हेतु शोध की अंतिम रूपरेखा

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़

के मानव्यविद्या संकाय अंतर्गत हिंदी विषय में विद्यावाचस्पति उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध की संक्षिप्तिका

शोध विषय:

"डॉ. निशा नंदिनी के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना"

शोधार्थी:

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला,

प्रबंधक (राजभाषा),

इंडियन बैंक,

कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नई

शोध निर्देशक:

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सहयोगी प्रोफेसर

हिंदी विभाग,

तोष्णीवाल कॉलेज, सेनगाव

सितंबर 2022

प्रस्तावना - किसी भी देश का साहित्य वहाँ की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों के अनुरूप बनता व बदलता है। साहित्य का मानव जीवन से चिरंतन संबंध रहा है। साहित्य का स्रष्टा मनुष्य है और मनुष्य के लिए ही साहित्य की सृष्टि है। मानव जीवन ही साहित्य का उपादान और विषयवस्तु रहा है और रहेगा। मानव जीवन एक विकासशील वस्तु है, इसीलिए साहित्य भी विकासशील वस्तु है। साहित्य में सामाजिक चेतना और भाषायी सौंदर्य का समावेश अनिवार्य है। मनुष्य का आंतरिक विकास साहित्य, संस्कृति और कलाओं से संभव है और यह सब समाज से ही उपजती है। साहित्य चाहे कविता हो या कहानी, वो तभी सार्थक है जब उसमें सामाजिक यथार्थबोध हो। ज्यों-ज्यों समाज की परिस्थितियाँ बदलती हैं हमारा साहित्य भी उसी के अनुरूप नया रूप लेने लगता है। डॉ. शिव मंगल सिंह सुमन ने अपने कविता 'हिल्लोल' में लिखा है:

विस्तृत पाठ है मेरे आगे, उस पर ही मुझको चलना है,

चिरशोषित असहायों के संग, अत्याचारों को दलना है॥

इन पंक्तियों के माध्यम से वे मात्र किशोर अवस्था का प्रणय या युवा भावनाओं की संवेदना ही व्यक्त नहीं किया बल्कि शोषित और असहाय वर्ग की पीड़ा और यतनाओं का चित्रण भी प्रस्तुत किया है।

भारत में सुदृढ़ रूप से राष्ट्रीय चेतना विदेशी प्रभुत्व के विरोध के रूप में प्रस्फुटित हुई। भारतीय राष्ट्रीयता में अंग्रेजों के संपर्क में आने से परिवर्तन आया। उस समय तक "राष्ट्रीयता" भारत के लिए नवीन विश्वास थी। इसके पूर्व इस देश में यह बात अपरिचित थी। जिसका शुभारंभ आधुनिक हिन्दी कविता के कवियों ने किया। अपने देश के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का लगाव रहता है। भारतवासी तो अपनी भूमि के प्रति सदा पुनीत भावना ही रखते आए हैं। इसी पुनीत भावना का वर्णन हिन्दी कवियों ने किया है। भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास का इतिहास भारतीयों के स्वराज प्राप्ति के लिए शासकों से संघर्ष का इतिहास है।

राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने में भारतीय नारियों का भी विशिष्ट पहचान है। भारतीय वीरांगनाओं के बलिदान की ऐतिहासिक परंपरा रही है। ऐसे ही नारियों/कवियों/कवयित्रीयों में से एक हैं डॉ. निशा नदिनी जिन्होंने अपने काव्यों व रचनाओं में सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का

अद्भुत समन्वय किया है तथा एक विशेष अंदाज में भारत के राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना को व्यक्त किया है। उन्होंने करीब 50 से भी ज्यादा पुस्तकों की रचना की है। उनके अधिकांश रचनाओं में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना से संबंधित लेख मिल ही जाते हैं। इससे यह निर्धारित होता है कि आज भी ऐसे कवयित्री हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं से लोगों के दिलों में राष्ट्रीयता को जागृत किया है या कर रहे हैं हाँ यह बात है कि आज कल ऐसे कवि/कवयित्री गिनती के ही हैं। इनके बारे में सम्पूर्ण / विस्तृत विवरण अनुलग्नक-। में दिया गया है।

शोध विषय की साहित्यिक समीक्षा: हमारे आसपास का परिवेश जिसे हम लोक भी कहते हैं, भाषायी सरोकार जनता के बीच हमारी चेतना को प्रभावित करता है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि जीवन के यथार्थ को अपनी रचना में किस रूप में और कितना व्यक्त करते हैं। हम लोग समाज का अर्थ समझते हैं - नारी और पुरुषों का समूह। जबकि समाज का वास्तविक अर्थ यह नहीं है। जब लोग समूहिक आदर्श से प्रेरित होकर उस आदर्श की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते हैं, तो वही समाज कहलाता है। समाज को सही पथ पर आगे बढ़ाने के लिए दो बातों का होना अत्यंत जरूरी है - एक महान आदर्श और एक महान व्यक्तित्व साथ में जरूरत है एक परिष्कृत साहित्य की। जहां तक भाषा का सवाल है, यह परिवेश और परंपरा से उपजती है, जिसे समाज में रहने वाला आदमी रचता है और लेखक भाषा, शिल्प और अपनी रचना को गढ़ने के औजार समाज से ही लेता है। मगर इसके लिए सतत रियाज और कड़ी मेहनत की जरूरत है। मनुष्य का आंतरिक विकास साहित्य, संस्कृति और कलाओं से संभव है और यह सब समाज से ही उपजती है। साहित्य चाहे कविता हो या कहानी, वो तभी सार्थक है जब उसमें सामाजिक यथार्थबोध हो। सामाजिक विद्रूपता, असमानता, शोषण और जनपक्षधरता कुछ ऐसे बिंदु हैं जिनके बिना सार्थक साहित्य का सृजन संभव नहीं। साहित्य, कला-संस्कृति जनपक्षधर होनी चाहिए, साहित्य की पक्षधरता सत्ता के पक्ष में नहीं बल्कि प्रतिरोधक होती है। समाज से कटकर लेखक अपने अंचल को आत्मसात नहीं कर सकता है।

लेखिका अपने समय और समाज को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ अपने समय के सवालों, विसंगतियों और चिंताओं से मुठभेड़ करती है। इसके बावजूद साहित्य मनुष्य को जानने-समझने की शक्ति तो देता है वहीं एक बेहतर इंसान भी बनाता है। यह सामाजिक चेतना का मूल स्वरूप है। कहानी में किस्सागोई जहां पहली शर्त है, वहीं जीवन का यथार्थ होना भी जरूरी है। दादी-नानी की कहानियों को सुनते हुए बड़े हुए हैं जिसमें लोकधर्मी सौंदर्य उभर कर सामने आता है। यह तभी संभव है जब आम पाठक इसे अपने जीवन, अपने आसपास और परिवेश

की कहानी के रूप में स्वीकार करेगा। अगर आपकी कहानी को पाठक अपने से जुड़ी हुई यथार्थ कहानी के रूप में मान्यता प्रदान करता है, तो यह आपकी सबसे बड़ी सफलता है।

अपने अनेक कविता के माध्यम से माखनलाल चतुर्वेदी जी ने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना उजागर किया था। इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयतवादी है जिसमें त्याग, बलिदान, कर्तव्य-भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को स्वर देने वालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरुष का हुंकार।

यदि सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना की बात हो तो ऐसे में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जीवन भर करोड़ों लोगों की आवाज बनकर देश में गूंजते रहे। दिनकर के चले जाने से वह कंठ लगभग मौन सा हो गया जिसने अपने गर्व भरे स्वरों में घोषित किया था-

"सुनूँ क्या सिंधु मैं गर्जन तुम्हारा/ स्वयं युग धर्म का हुंकार हूँ मैं"।

हिंदी साहित्य के इतिहास में ऐसे लेखक बहुत कम हुए हैं जो सत्ता के भी करीब रहे हों और जनता में भी उसी तरह लोकप्रिय हों। जो जनकवि भी हों और साथ ही राष्ट्रकवि भी। दिनकर का व्यक्तित्व इन विरोधों को अपने भीतर बहुत सहजता से साधता हुआ चला था। कहते हैं चीन के हाथों मिली हार के बाद पूरा देश हताशा में जी रहा था। तब संसद में अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए दिनकर जी ने उग्र काव्य पाठ किया था उसकी कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई है:

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ

जाने दे उनको स्वर्ग धीर,

पर, फिरा हमें गाण्डिव गदा,

लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे ही कवियों में से एक थे जिन्होंने अपनी कविता "सिपाही" में साफ-साफ लिखा था

खिचों राम-राज्य लाने को,
भूमंडल पर त्रेता !
बनने दो आकाश छेदकर,
उसको राष्ट्र विजेता ॥

राष्ट्र के प्रति अपनत्व तथा अगाध प्रेम की भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। आज राष्ट्रीयता एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा है। राष्ट्रीयता का संबंध केवल जड़भूमि से न होकर आंतरिक होता है। अपने देश के अगाध प्रेम में अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति तथा अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होती है।

रामधारी सिंह दिनकर तथा माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों के बाद एक लंबा अंतराल राष्ट्रीय कवियों में देखने को मिला है। मुंशी प्रेमचंद, रामदरश मिश्र जैसे कवियों में सामाजिक चेतना पर्याप्त रूप से देखने को मिली थी वैसी चेतना बाद के कवियों में नहीं मिली। डॉ. निशा नंदिनी के रचनाओं का अध्ययन कर उसमें व्यक्त सामाजिक व राष्ट्रीय भावनाओं को उजागर करना व साक्षात्कार द्वारा उनकी भावनाओं को लोगों तक पहुंचाना मेरी मुख्य कार्य पद्धति रहेगी। इन्होंने भी अपने रचनाओं में सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना व्यक्त करने की अद्भुत प्रयास किया है।

शोध विषय की कार्य पद्धति: कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व उसकी दिशा निश्चित की जाती है। विषय के अनुरूप एक विशेष पद्धति के अनुसार ही कार्य किया जाता है तभी वह सफलता के शिखर पर पहुंचता है। साहित्य में शोध के लिए एक अथवा एक से अधिक साहित्यिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जहां तक प्रस्तावित शोध विषय का प्रश्न है तो इस विषय में विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धति एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति के साथ-साथ आधुनिक शोध पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

विषय का महत्व और उद्देश्य - डॉ. निशा नंदिनी के रचनाओं में व्यक्त सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है मेरे शोध के कार्य का इसके अलावा भी कई उद्देश्य है जो निम्नलिखित हैं:

क) डॉ. निशा नंदिनी द्वारा रचित साहित्य के विभिन्न विधाओं में सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रभाव।
ख) देश के साहित्यिक विकास में समाज एवं कवयित्री की भूमिका।

ग) साहित्य को काव्य व अन्य विधाओं के माध्यम से जागरूक, सचेत एवं निरंतर गति प्रदान करना।

घ) आज के भागम-भाग साहित्य में एक सुदृढ़ सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।

ङ) डॉ. निशा नंदिनी का व्यक्तित्व एवं कृतत्व का अध्ययन।

शोध विषय का महत्व होगा आज के कवियों में राष्ट्र के प्रति संवेदना तथा सामाजिक चेतना को बढ़ाना ताकि वे इससे संबंधित ज्यादा से ज्यादा रचनाएँ कर सकें। आज हमारा सम्पूर्ण साहित्य एक नई राह की तलाश में है ऐसे यह महत्वपूर्ण होगा कि इस शोध से नए राह प्रदान किया जाए तथा कवयित्री को उनके द्वारा हिन्दी साहित्य के विकास में निस्वार्थ भाव से समर्पित 30 वर्षों से भी ज्यादा के योगदान हेतु स्थापित किया जाए।

प्रस्तावित शोध विषय पर लेखन कार्य या शोध कार्य : प्रस्तावित शोध विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य या लेखन कार्य नहीं हुआ है अतः यह मेरे लिए चुनौतीपूर्ण होगा की इस नवीन विषय पर ईमानदारी से शोध कार्य कर इसे स्थापित कर सकूँ।

सीमाएं- मेरे शोध कार्य की सीमा डॉ. निशा नंदिनी के सम्पूर्ण रचनाओं में व्यक्त सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन होगी।

प्रस्तावित शोध विषय की रूप रेखा: प्रस्तुत शोध विषय को तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर अधोलिखित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा जो इस प्रकार है:

प्रथम अध्याय : सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का निर्धारण, परिकल्पना, इतिहास, विकास एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य

इस अध्याय में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का निर्धारण, परिकल्पना, इतिहास विकास एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करेंगे जिसके अंतर्गत विभिन्न उपविषय होंगे जैसे कि समाज अर्थ स्वरूप और परिभाषा, समाज और व्यक्ति, समाज में व्याप्त विभिन्न इकाइयां, समाज एवं राष्ट्र का हमारे विशाल संस्कृति का संबंध, साहित्य एवं समाज का संबंध, समाज एवं राष्ट्र का साहित्य पर प्रभाव, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का अर्थ, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का इतिहास एवं विकास, भारत के संदर्भ में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के विविध आयाम के बारे में चर्चा करेंगे

आदि। इसके अलावा हम इस अध्याय में स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योतर भारत में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करेंगे। सामाजिक चेतना एवं व्यक्ति चेतना, साहित्य एवं समाज तथा राष्ट्र का पारस्परिक संबंध आदि का अध्ययन करेंगे। सामाजिक चेतना में कवियों / लेखकों, कवयित्रीयों / लेखिकाओं का योगदान, राष्ट्रीय चेतना में कवियों / लेखकों, कवयित्रीयों / लेखिकाओं का योगदान के बारे में चर्चा किया जाएगा। सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के वर्तमान परिदृश्य का विस्तार में अध्ययन करेंगे।

दूसरा अध्याय: डॉ. निशा नंदिनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में डॉ. निशा नंदिनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया जाएगा जिसके अंतर्गत जन्म, माता-पिता, उनके बचपन के बारे में, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी-पेशा, विवाह, स्वभाव, साहित्यिक प्रेरणा, प्रकाशित रचनाएँ और उसमें प्रदर्शित समाजिक मनोभावना, सम्मान व पुरस्कार, विभिन्न संस्थाओं के लिए कार्य निष्पादन, सामाजिक अस्तित्व, साहित्य का लेखिका के जीवन पर प्रभाव, लेखिका का साहित्य पर प्रभाव, हिन्दी साहित्य में लेखिका का योगदान, अन्य साहित्य के लिए लेखिका की रचनाएँ एवं विशेष योगदान के बारे में अध्ययन किया जाएगा। लेखिका की विशेष रुचिकर विषय तथा उनके द्वार सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना हेतु किए गए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कार्य का विस्तार से चर्चा करेंगे। उनके द्वारा सम्पूर्ण साहित्य विद्याओं में किए गए कार्य को लोक पटल पर लाया जाएगा। इनके रचनाओं को विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के तौर पर विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है इन रचनाओं का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा। जहां एक ओर वे समाज पर व्यंग्य करती हैं वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति देश भक्ति जगाने का प्रयत्न करती है जिसका अध्ययन हम करेंगे।

तीसरा अध्याय : डॉ. निशा नंदिनी के समकालीन साहित्य का अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत डॉ. निशा नंदिनी के समकालीन साहित्य एवं साहित्यकारों का अध्ययन किया जाएगा। जिसके तहत समकालीन लेखिकाओं को केंद्र में रखकर अध्ययन किया जाएगा, सभी प्रकार के साहित्यों विशेषकर जिसमें सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना वर्णित हुआ हो। समकालीन गद्य साहित्य, समकालीन काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य साहित्य का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत कुछ आलोचकों का भी अध्ययन किया जाएगा। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है अतः समकालीन साहित्य का अध्ययन उस समय के समाज को जानने एवं समझने हेतु करना आवश्यक होता है। समकालीन लेखिकाओं

में अमृता प्रीतम, चित्रा मुद्गल, अलका सरावगी, नासिरा शर्मा आदि का अध्ययन किया जाएगा। उपर्युक्त लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं अस्तु डॉ. निशा नंदिनी एवं इन लेखिकाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जाएगा।

चौथा अध्याय : डॉ. निशा नंदिनी के काव्य में सामाजिक चेतना

इस अध्याय में हम डॉ. निशा नंदिनी के काव्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन करेंगे जिसके अंतर्गत हिन्दी काव्य में सामाजिक चेतना, साहित्य में सामाजिक चेतना, प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन एवं प्रेमचंदतोत्तर सामाजिक चेतना का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्याय में डॉ. निशा नंदिनी के सम्पूर्ण काव्य में विलक्षित सामाजिक चेतना को उजागर किया जाएगा जो शोध की एक प्रमुख विषय भी है। समकालीन काव्य की प्रवृति का भी अध्ययन किया जाएगा। डॉ. निशा नंदिनी के काव्य संग्रह सीप के मोती, मनुसाई, भाव गुल्म, शब्दों का आईना, आगाज आदि आधार ग्रंथ होंगे। लेखिका ने अपने कविता "दीप हूँ मैं माटी का" में सामाजिक चेतना को जागृत करने हेतु लिखती हैं

"दीप हूँ मैं माटी का

नित्या अँधेरों से लडूँगा"

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़िवादिता तथा अँधेरों रूपी बुराइयों को दीप कि तरह जलकर दूर करना होगा। अतः इस अध्याय में ऐसे ही काव्यों का अध्ययन किया जाएगा।

पाँचवाँ अध्याय : डॉ. निशा नंदिनी के गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना

इस अध्याय में डॉ. निशा नंदिनी के गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया जाएगा जिसके अंतर्गत इनके कहानी में सामाजिक चेतना, निबंध में सामाजिक चेतना, उपन्यास में सामाजिक चेतना, जीवनी संग्रह में सामाजिक चेतना तथा उनके द्वारा रचित अन्य गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया जाएगा। समकालीन गद्य साहित्य में भी प्रदर्शित सामाजिक चेतना व उस समय की गद्य साहित्य की प्रवृति के बारे में अध्ययन किया जाएगा। समय-समय पर सामाजिक चेतना को दिखाने एवं जनता के बीच में इसे लाने के लिए किस प्रकार के गद्य साहित्य का सृजन किया जाता है ताकि जनता को आसानी से समझ में आए। गद्य साहित्य में किसी भी चेतना को दर्शाना आसान होता है जिसे जनता के सामने

बिलकुल सरल ढंग से लाया जा सकता है। उनके द्वारा रचित उपन्यास दिग्भ्रमित, कोहरे की चादर (कथा संग्रह), मनुष्य रूप में हम क्या हैं (निबंध संग्रह), अभिप्रेरणा (जीवनी संग्रह) आदि में सामाजिक चेतना को उजागर किया जाएगा। कन्यादान किसका और क्यों (निबंध संग्रह) में लेखिका सामाजिक चेतना जगाने का उत्तम प्रयास किया है। वीरांगना कनकलता बरुआ एक जीवनी संग्रह है जिसके माध्यम एक ओर सामाजिक चेतना तो दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को भी जगाने का कार्य किया है। अतः इस अध्याय में ऐसे ही गद्य साहित्य का अध्ययन किया जाएगा जो विशेषतः सामाजिक चेतना जगाने का कार्य किया है।

छठा अध्याय : डॉ. निशा नंदिनी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

इस अध्याय में डॉ. निशा नंदिनी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया जाएगा जिसके अंतर्गत हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना, रामधारी सिंह दिनकर पूर्व, दिनकर युगीन तथा दिनकर पश्चात भारत में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप एवं विकास। इसके साथ डॉ. निशा नंदिनी के सम्पूर्ण काव्य विशेषतः वैसे काव्य जिसमें राष्ट्रीय चेतना का प्रसंग हो। गागर में यदि सागर भरने की जरूरत हो तो वो कार्य काव्य / कविता करती है और यदि बात हो राष्ट्रीयता जगाने की तो इसमें सबसे बेहतरीन शस्त्र है काव्य जिसमें कम ही शब्दों में राष्ट्र की समस्या को जनता के सामने बखूबी लाया जा सकता है। हमें विदित ही है कि हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना प्रमुख रही है। 20 वीं शताब्दी के आरंभ में जब स्वाधीनता संग्राम में तीव्रता आ गई। इस अध्याय के अंतर्गत प्रमुख राष्ट्रीय कवियों जिन्होंने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीयता जगाने की कोशिश की है उनका अध्ययन किया जाएगा। लेखिका अपने एक कविता “कफन तिरंगा दे जाओ” में वे कहती हैं”

चाह नहीं प्रभु महलों की सैर कराओ,

चाह प्रभु सिर्फ इतनी मेरी कफन तिरंगा दे जाओ”

उक्त पंक्तियों के माध्यम से लेखिका स्पष्ट कर रही हैं कि सिर्फ और सिर्फ चाह है तो कफन रूपी तिरंगा पाने की। जैसा कि हम जानते हैं कि कफन रूपी तिरंगा सिर्फ हमारे देश सैनिकों को देश पर अपने प्राण को निछावर करने के लिए दिया जाता है। अतः लेखिका का भी यही अरमान हैं कि देश के लिए नौ-निछावर हो जाए। इन पंक्तियों के माध्यम से हमें भी संदेश देती है कि अपनी चाह को देश के साथ जोड़कर रखें।

सातवाँ अध्याय : डॉ. निशा नंदिनी के गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

इस अध्याय में डॉ. निशा नंदिनी के गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया जाएगा जिसके अंतर्गत इनके कहानी में कहानी चेतना, निबंध में राष्ट्रीय चेतना, उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना, जीवनी संग्रह में राष्ट्रीय चेतना तथा उनके द्वारा रचित अन्य गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया जाएगा। समकालीन गद्य साहित्य में भी प्रदर्शित राष्ट्रीय चेतना व उस समय की गद्य साहित्य की प्रवृति के बारे में अध्ययन किया जाएगा। समय-समय पर राष्ट्रीय चेतना को दिखाने एवं जनता के बीच में इसे लाने के लिए तरह के गद्य साहित्य का सृजन किया जाता है ताकि जनता को आसानी से समझ में आए। गद्य साहित्य में किसी भी चेतना को दर्शाना आसान होता है जिसे जनता के सामने बिलकुल सरल ढंग से लाया जा सकता है। उनके द्वारा रचित उपन्यास दिग्भ्रमित, कोहरे की चादर (कथा संग्रह), मनुष्य रूप में हम क्या हैं (निबंध संग्रह), अभिप्रेरणा (जीवनी संग्रह) आदि में राष्ट्रीय चेतना को उजागर किया जाएगा। उन्होंने “वीरांगना कनकलता बरुआ (जीवनी)” लिखी जो देश के प्रति अमिट प्रेम है। इनके जीवनी से सम्पूर्ण राष्ट्र को राष्ट्रीयता की प्रेरणा मिलती है। यह वीरांगना देश के असम राज्य से संबंध रखती है तथा देश के स्वतंत्रता के लिए अपनी जीवन की बलिदान दे दी थी। अपने सभी स्वर्णिम सपनों को देश के लिए त्याग दिया था।

उपसंहार:

इसके अंतर्गत सम्पूर्ण अध्याय के आधार पर तथा तथ्यों व आकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाएगा।

साक्षात्कार

परिशिष्ट:

आधार ग्रंथ:

1. अहं ब्रह्म अस्मि (निबंध संग्रह)- डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, मंजुली प्रकाशन, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
2. मनुष्य रूप में हम क्या हैं (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, मंजुली प्रकाशन, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
3. कोहरे की चादर (कथा संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
4. शैवालिनी (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2022, जनवाणी प्रकाशन, विश्वास नगर, दिल्ली-110032
5. अस्तित्व (कथा संग्रह)- डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
6. युग पुरुष स्वामी विवेकानंद की प्रेरक कहानियां - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली

7. जादू सकारात्मक सोच का (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, ग्रंथ भारती, वेस्ट कांति नगर, दिल्ली-110051
8. बच्चों को जीने दो - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
9. क्षितिज की रेखा (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
10. सीप के मोती (काव्य संग्रह)- डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
11. मनोबल की जीत (बाल कहानी संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, निर्मल साहित्य प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

12. पैसों का पेड़ (प्रेरक बाल कहानियाँ) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, लिटरेचर लैंड, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
13. भारत का गौरव असम - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली
14. मनुसाई (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, शब्द इन प्रकाशन, नई दिल्ली
15. उपन्यास दिग्भ्रमित - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, नई दिल्ली
16. भाव गुल्म (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, राजभाषा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली-110032
17. शब्दों का आईना-काव्य संग्रह - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, अनोदिय साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश
18. आगाज़ (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, प्रेमनाथ एंड संस, शाहदरा, दिल्ली-110032
19. जुनून (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, सजल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032
20. बोलती दिवारें (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2017, विक्की पब्लिशर्स, गुवाहाटी-5
21. कोरा कागज (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2017, विक्की पब्लिशर्स, गुवाहाटी-5
22. तार पर टंगीं बूंदें (काव्य) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2017, ग्रंथ भारती, कांति नगर, दिल्ली-110051
23. दिल की जुबां से (काव्य) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2017, प्रतिमा प्रकाशन, लक्ष्मी नगर दिल्ली-110092
24. दो आँसू एक रूप (काव्य) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, ग्रंथ भारती, कांति नगर, दिल्ली-110051

25. हथेली पर चांद (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, लिटरेचर लैंड, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
26. बिन आखर बिन शब्द (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, लिटरेचर लैंड, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
27. बोनसाई होता जीवन (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
28. यत्र-तत्र सर्वत्र स्वच्छ (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, ग्रंथ भारती, कांति नगर, दिल्ली-110051
29. हिचकी (गीत संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, नई दिल्ली
30. देखो सूरज खड़ा हुआ (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, नई दिल्ली
31. जीवन की कुंजी श्रीमद् भगवद् गीता - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
32. तमसो मा ज्योतिर्गमय (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
33. भारतीय पर्वों का महत्व - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
34. दीपम् ज्योति नमोस्तुते (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
35. कन्यादान किसका और क्यों (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य केंद्र प्रकाशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
36. जिज्ञासा (जीवनी संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2018, साहित्य केंद्र प्रकाशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

37. हिंदी-हिंदू-हिंदुस्तान (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, लिटरेचर लैंड, नई दिल्ली
38. भारत की सशक्त महिलाएं (जीवनी संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
40. लोक कथाओं की महक - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
41. अभिप्रेरणा (जीवनी संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2019, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
42. असम की गौरवमयी संस्कृति - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2020, ग्रंथ भारती, कांति नगर, दिल्ली-110051
43. कोरा कागज (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2017, विक्की प्रकाशन, भाड़ागढ़, गुवाहाटी-5
44. मेरी यूरोप यात्रा (यात्रा संस्मरण) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, साहित्य भूमि, मोहन गार्डन, नई दिल्ली-110059
45. जेना की जीत (उपन्यास) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2022, साई पब्लिकेशन मेरठ,
46. नीति निबंध - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, ग्रंथ भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली
47. मुट्ठी भर रेत (काव्य संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2022, शब्द इन प्रकाशन, नई दिल्ली
48. कराग्रे वस्ते लक्ष्मी (निबंध संग्रह) - डॉ. निशा नंदिनी, वर्ष-2021, साहित्य भूमि प्रकाशन, मोहन गार्डन, नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ:

कोश हिन्दी :

कोश अँग्रेजी:

अँग्रेजी ग्रंथ :

पत्र -पत्रिकाएं :

संदर्भ सूची:

1. **गूगल इंटरनेट**
2. **डॉ. पंडित बन्ने - भारतीय साहित्य एवं राष्ट्रीयता (पृष्ठ सं- 16, 21, 23), वर्ष-2021, शुभम् पब्लिकेशन, कानपुर**
3. **डॉ. निशा नंदिनी - जिज्ञासा, पृष्ठ सं-95,वर्ष-2018, नई दिल्ली**
4. **डॉ. निशा नंदिनी - बोनसाई होता जीवन, पृष्ठ सं- 53,वर्ष-2021, साहित्य भूमि, नई दिल्ली**
5. **डॉ. रज़िया शेख- डॉ. शिव मंगल सिंह सुमन के काव्य में सामाजिक चेतना (पृष्ठ सं.- 30), वर्ष-2013, पुजा प्रिंटर्स, कानपुर-21**

शोधकर्ता:

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

प्रबंधक (राजभाषा)

इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नई

शोध निर्देशक:

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सहयोगी प्रोफेसर

तोष्णीवाल कॉलेज, सेनगाव